

एतिकाफ़

एतिकाफ़ के आखरी १० दिन कैसे
गुज़ारें



T A R E E Q A H
M U H A M M A D I Y A H

अहमद डब्बाग निगरानी में

 facebook.com/ShaykhAhmadDabbagh

 Hindi

ऐतिकाफ़ के बुनियादी नियम

ऐतिकाफ़ की परिभाषा

ऐतिकाफ़ के इरादे से उसी मस्जिद में रहना जहां जमात के साथ नमाज़ होती है

ऐतिकाफ़ की शर्तें

१. इस्लाम हो, अर्थात मुसलमान हो
२. समझदार हो, अर्थात पागल न हो
३. तहारत (पवित्रता). हदस-ए-अकबर (बड़ी नापाकी) से पाक हो, अर्थात जिस कारण गुस्ल (नहाना) करना पड़े
४. नीयत (इरादा)

सुन्नत ऐतिकाफ़ की नीयत ऐसे है

"नवैतु सुन्नतल ऐतिकाफ़ लिल्लाह अज्जावा जल"

ऐतिकाफ़ के अनेक नियम

१. ऐसा कुछ जरूरी नहीं कि ऐतिकाफ़ के पूरे समय आप खामोश रहें। ऐसा करना मकरूह अर्थात पसंद नहीं किया जाता है। बल्कि बन्दे को अच्छी बातें करनी चाहिए और बहस और पाप वाली बातों से बचना चाहिए।

२. यह जरूरी है कि ऐतिकाफ़ में रहते हुए पर्चे पर बताए गए आमाल करें।

३. यदि बिना किसी जरूरी कारण के कोई मस्जिद से बाहर जाए चाहे थोड़ी देर के लिए ही सही, चाहे जान कर या अनजाने में, तो ऐसे में ऐतिकाफ़ टूट जाए गा और उसे कज़ा करनी होगी अर्थात दोहराना पड़े गा, यदि एक पांव भी निकाला हो तब भी। तो ऐसे में एक दिन की कज़ा करनी पड़े गी जो कि पूरे साल में कभी भी की जा सकती है।

४. यदि कोई रमज़ान के आखरी १० दिन और रातों में सुन्नत ऐतिकाफ़ का इरादा करता है तो उसे २१ रमज़ान की रात से पहले, सूर्य के डूबने से पहले (मग़रिब) से ले कर ईद का चांद दिखने तक के ऐतिकाफ़ पूरा करना चाहिए। इस तरह से ऐतिकाफ़ होता है।

५. यदि किसी को जबरदस्ती मस्जिद छोड़नी पड़ जाए तो इस से ऐतिकाफ़ खतम हो जाता है।

६. यदि कोई किसी सही कारण के मस्जिद से निकलता है लेकिन रास्ते में कोई पकड़ लेता है या उसे किसी रोग के कारण देर हो जाती है तो इस से भी ऐतिकाफ़ खतम हो जाता है।

७. यदि कोई मस्जिद से निकले तो उस के लिए ये जायज़ कारण हो सकते हैं:

१. शौचालय जाने के लिए
२. वुजू करने के लिए
३. गुस्ल (नहाना) जब वाजिब (जरूरी) हो जाए
४. खाना लाने के लिए अगर कोई और न हो तो

८. यदि जुम्मा की नमाज़ उस मस्जिद में न हो जहां एतिकाफ़ किया जा रहा है तो ऐसे में दूसरी मस्जिद जुम्मा के लिए जाया जा सकता है। जाने वाले को चाहिए कि दूसरी मस्जिद जाने आने, वहां सुन्नत अदा करने, और खुत्बाह आदि के समय को ध्यान में रखे। यदि कसी को उस मस्जिद में कुछ पल की देरी हो जाती है तो उस से एतिकाफ़ नहीं टूटता।

९. यदि कोई व्यक्ति ऊपर बताए गए ६ कारणों के अलावा और किसी कारण के मस्जिद से बाहर जाता है जैसे मुंह धोने, दांत मांजने या फिर बिना किसी जरूरत के नहाने तो ऐसे सब अनावश्यक कामों को मस्जिद के बाहर नहीं किया जा सकता है। यदि किसी जरूरी कारण के बाहर जाना भी पड़े तो उस समय भी साथ में कोई अनावश्यक काम नहीं किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी को दांत मांजना है तो वह इंतजार करे जब उस को वुजू करने की जरूरत पड़े या शौचालय जाना हो तो वह अपने दांत साफ़ कर ले।

१०. गुस्ल (नहाना) उस समय तक नहीं किया जा सकता जब तक के गुस्ल वाजिब न हो जाए। इस के अलावा अगर कोई समस्या हो तो आलिम से पूछें। उदाहरण के लिए, यदि किसी के शरीर से दुर्गंध आने लगे या फिर शरीर में खुजली दाने निकल आएँ और नहाना अशद जरूरी हो जाए तो फिर वह अपने आप को कष्ट से बचाने के लिए पानी डाल आए लेकिन साबुन और शैम्पू का उपयोग न करे, बल्कि अगर इस से भी बचा जा सके तो बचा जाए।

११. यदि कोई वुजू की स्थिति में न हो और चाहे कि केवल वुजू में रहने के लिए वुजू करे तो एतिकाफ़ में रहने वाले के लिए यह जायज़ नहीं है। हां, यदि कोई इबादत करने के लिए वुजू करना चाहे तो कर सकता है जैसे नफ़िल नमाज़ कुरआन की तिलावत के लिए।

एतिकाफ़ के फ़ज़ाइल

यह जानना चाहिए कि रमज़ान के आखरी १० दिनों में एतिकाफ़ करना अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम) की बराबर आदत रही थी जैसा कि सख़िदा आईशा बताती हैं कि नबी साल के और दिनों की तुलना में रमज़ान के आखरी १० दिनों में अपनी इबादत को और बढ़ा लेते थे। तो इस मुबारक सुन्नत पर अमल करना खुद ही में एक इनाम है क्योंकि आप भी नबी की तरह रमज़ान के आखरी १० दिनों में एतिकाफ़ करेंगे। बल्कि उन्होंने ने हमें इन्ही दिनों में लैलतुल क़द्र ढूंढने का निर्देश भी दिया है जो कि एक ऐसी रात है जो १००० रातों से बेहतर है। यह रात रमज़ान के आखरी १० दिनों में और कुछ हदीस के अनुसार आखरी १० ताक़ (विषम संख्या) रातों में आती है। तो जो कोई भी एतिकाफ़ में बैठे गा और खुद को इबादत में लगाए रखे गा तो वह इस रात की बरकतें भी पाले गा, इंशाअल्लाह। एतिकाफ़ के और फ़ज़ाइल यह हैं:

१. जो कोई रमज़ान के आखरी १० दिनों में एतिकाफ़ करे गा उसे दो हज और दो उम्रे का सवाब मिले गा (बैहक़ी)

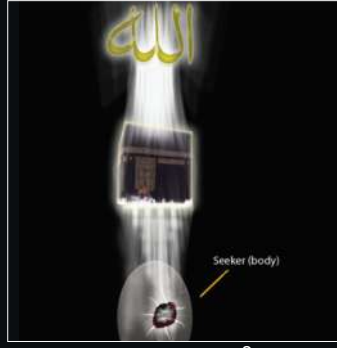
२. एक व्यक्ति जो इबादत के इरादे और सवाब की नियत से एतिकाफ़ में बैठता है तो उस के सब सगीरा गुनाह (छोटे पाप) माफ़ कर दिए जाते हैं।

कैसे एक बन्दा रमज़ान के आखरी १० दिनों का उपयोग करे और क्या आमाल करने चाहिए

ऐ अल्लाह के बन्दे, इन आखरी १० दिनों को तौबा में गुजारें क्योंकि वैसे भी यह महीना पूरा होने को है। हक़ के खोजकर्ता को यही सलाह है कि यह बचे हुए कुछ दिन तौबा और अपने रब का शुक्र अदा करने में गुजार दें। ये दिए गए आमाल और अज़कार करें:

اللَّهُ اللَّهُ

४५ मिनट अल्लाह अल्लाह



तस्वीर १

اللهم يا رب يجاؤ سيينا محمد ابن عبد الله في الجمع بيني
و بين سيينا محمد ابن عبد الله في الدنيا قبل الآخرة

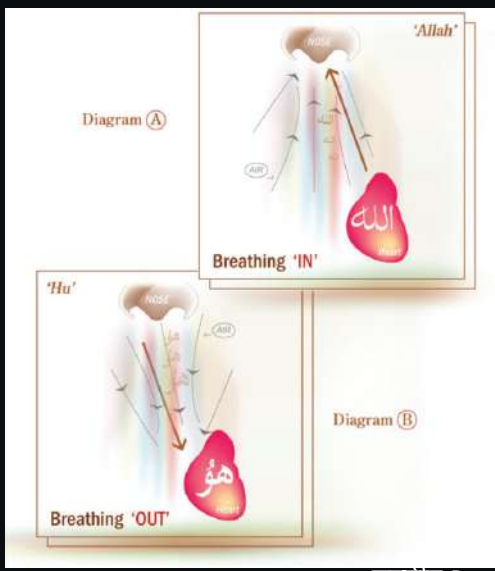
"ऐ अल्लाह, ऐ रब, हमारे आका मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ﷺ के सदक़े से, उन पर दुरूद और सलाम हो, मुझे और हमारे आका मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह को इस दुनिया में आखिरत (मौत) से पहले मिला दे" (३० मिनट)



तस्वीर २

الله هو

१५ मिनट सांस लेने का अभ्यास - अल्लाह हू
देखें तस्वीर ३



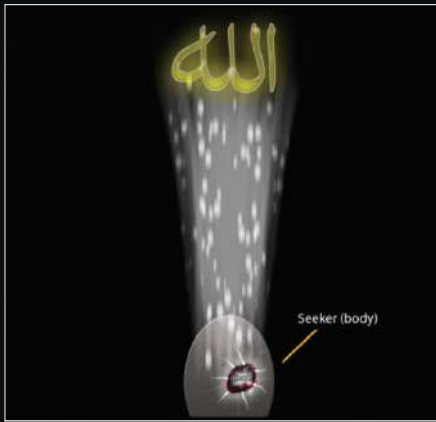
तस्वीर ३

يا الله يا رحمن يا رحيم

१५ मिनट "या अल्लाह या- रहमान या-रहीम" ज़िक्र (रब के अर्थ पर विचार करें)

مراقبه

१० मिनट ध्यान करें - खोजकर्ता को यह एहसास और विश्वास होना चाहिए कि वह अपने रब की मौजूदगी में है और यह ख्याल करे कि एक नूर अल्लाह से उसके दिल पर उतर रहा है।



तस्वीर ४

مناجات

१५ मिनट मुनाजात - खोजकर्ता को अपना दिल और ज़हन का उपयोग करना चाहिए कि वह हमारे रब से बात करे, माफ़ी मांगे, और इस दुनिया के सफर में अपने लिए मार्गदर्शन की प्रार्थना करे।

बन्दा जब यह सब आमाल करे तो क्या विचार करे।

इन तीन बातों को याद रखें

१. अल्लाह आप को देख रहा है
२. अल्लाह आप को सुन रहा है
३. अल्लाह आप के साथ है, यह एहसास और विश्वास रखें कि आप अल्लाह की मौजूदगी में हैं।

कल्पना करें कि आप काबा के सामने बैठे हैं, और आप जहां कहीं देखते हैं आप को अल्लाह का नाम लिखा दीखता है। यह भी कल्पना करें कि अल्लाह के नाम से नूर आ कर आप के दिल से टकरा रहा है, और फिर यह एहसास करें कि यह नूर आप के शरीर में दौड़ रहा है और नाम "अल्लाह" पुकार रहा है। फिर यह कल्पना करें कि रहमत के द्वार (काबा के द्वार) खुल रहे हैं और आप के शरीर पर नूर की वर्षा हो रही है।

वह जिन के दिल खरे हैं और अल्लाह को पुकारते हैं उन्हें निश्चित रूप से प्यारे पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम) के द्वार पर आमंत्रित किया जाए गा।

वह लोग क्या करें जो काम या परिवार के कारण रमज़ान के इन आखरी १० दिनों में एतिकाफ़ नहीं कर सकते हैं।

यदि कोई व्यक्ति सच्ची चाहत और लगन रखता है कि रमज़ान के आखरी १० दिनों में एतिकाफ़ करे लेकिन काम या घरेलू समस्याओं के कारण वह ऐसा नहीं कर पता तो उस को बिल्कुल भी निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि हमारा रब सब अच्छे कर्मों का बदला देता है। बन्दे को चाहिए कि वह ज्यादा से ज्यादा समय मस्जिद या खानकाह (जावियाह) में बिताए।

जो खोजकर्ता है उसे पहले वह आमाल करने चाहिए जो उसे खानकाह (जावियाह) में बताए गए हैं और उन के करने से सांसारिक विचार उसे तंग नहीं करेंगे। यदि कोई ऐसा न कर सके तो "अल्लाह अल्लाह" के ज़िक्र पर ध्यान दे जब भी उस के पास समय हो यह ज़िक्र कर ले (जहां कहीं भी आसानी हो)। साथ में उस को १५ मिनट मुनाजात भी करना चाहिए और दिल से अपने रब को पुकारना चाहिए।

हमारे रब ने जगत और समय में कई प्रकार की संभावनाएं रखी हैं। खोजकर्ता को कोशिश करनी चाहिए कि ये आमाल खानकाह (जावियाह) के भीतर करे और तन्हाई में लोगों के साथ मिल कर ये आमाल करे।

खोजकर्ता को रमज़ान के इन आखरी १० दिनों के लिए तैयार रहना चाहिए और पहले से ही काम से छुट्टी ले रखनी चाहिए। शैतान अपनी योजना बनाता रहता है जबकि आप ने अपनी योजना बना कर हमेशा आगे रहते हुए इबादत करते रहना चाहिए।

रमज़ान के सामान्य आमाल

१. सुन्नत वाली ज़िन्दगी को अपनाइये, पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम) की सुन्नत, खास तौर पर खाने पीने के तरीकों में।
२. हर सुबह और शाम सलातुत तौबा (तौबा के लिए) और सलातुश शुक्र (शुक्र के लिए) की नमाज़ें अदा करें, रब से माफ़ी मांगें और उस का शुक्र अदा करें जिस ने इस उम्मत को यह महीना दिया।
३. रोजाना जुहर नमाज़ के बाद सलातुस तस्बीह अदा करें।
४. कोशिश करें कि आप के रोज़ों की रूहानियत जितनी ऊपर स्तर तक जा सके।
५. कोशिश करें कि रोजाना ३० मिनट से एक घंटे तक कम से कम कुरआन को पढ़ें और उस के अर्थ को समझें।
६. आप को सुबह और शाम ३०० बार दुरूद पढ़ना चाहिए। क्योंकि यह पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम) ही थे जिन्होंने इस उम्मत को इस मुबारक महीने का बताया।

तज़किया नुप्रस (तरीका मुहम्मदिया) के बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया हम से मुहम्मदिया हाउस ऑफ़ विस्डम, ३३ रिडलिंग लेन, हाइड, चेशायर एस.के१४ १एन.पी पर हम से संपर्क करें।

www.zawiyah.org / info@zawiyah.org